International Journal of Geography, Geology and Environment 2023; 5(2): 06-10

International Journal of Geography, Geology and Environment

P-ISSN: 2706-7483
E-ISSN: 2706-7491
IJGGE 2023; 5(2): 06-10
Received: 11-04-2023
Accepted: 13-05-2023

आर. एन. शर्मा
प्रोफेसर, भूगोल शास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

गिरधारी लाल टाक
शोधार्थी, भूगोल शास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
आर. एन. शर्मा
प्रोफेसर, भूगोल शास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

घुमन्तू जाति बंजारा के सामाजिक–आर्थिक जीवन के स्तर का भौगोलिक अध्ययन (राजस्थान राज्य के विशेष संदर्भ में)

आर. एन. शर्मा, गिरधारी लाल टाक

सारांश
भारतीय समाज में घुमन्तू जातियों को निम्न, अशुद्ध, हीन एवं पिछड़ा माना जाता है। परम्परागत समाज व्यवस्था में इन्हें स्थान नहीं मिल पाया है, इन्हें सत्ता, सम्पत्ति एवं शिक्षा से वंचित रखा गया है। रोटी, कपड़ा और मकान जैसी मूलभूत मानवीय सुविधा से यह जातियाँ वंचित रही है। उदर निर्वाह हेतु भटकन की विवशता के कारण इन्हें समाज जीवन में समन्वय का अभाव होता है। सरकार द्वारा इन जातियों को मुख्यधारा में लाने के लिए इनके शैक्षणिक स्तर को बढ़ाने की पहल करनी चाहिए।

कूटशब्द : परम्परागत समाज, मूलभूत मानवीय सुविधा, घुमन्तू, भटकन।

प्रस्तावना
समाज का ऐसा तबका जो जीवन–यापन के लिए तथा भरण–पोषण को एक स्थान से दूसरे स्थान पर आजीविका के साधनों की खोज में भटकता है, "घुमन्तू" कहलाता है। एक पुरानी कहावत है, रमता जोगी बहता पानी, इनका कहीं ठहराव नहीं होता चलते या बहते रहना इनकी नियती है। हमारे देश में भी करोड़ो लोग ऐसे है जिनकी प्रकृति भी कुछ ऐसी ही है एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकते रहना। कभी इस शहर तो कभी इस गाँव। इसमें अधिकतर लोग विमुक्त, घुमंतू और अर्द्धघुमन्तू जातियों तथा जनजातियों से सम्बन्धित है।
यह वह जातियाँ है जिनको बस्ती मे रहना नसीब न हुआ, जिनको नाम के लिए गाँव नहीं, रहने के लिए घर नहीं जिनका सरकारी दफ्तरों में नाम नहीं, जिनकी कोई प्रतिष्ठा नहीं उपेक्षित जीवन नसीब में आने के कारण पेट भरने के लिए काम के लिए लगातार गाँव–गाँव भटकता हुआ, भीख माँग कर जीवन यापन करता हुआ तथा परम्परा के अनुरूप चली जा रअी कला, मनोरंजन को दिखाकर स्वयं का पेट भरने वाला लोग समूह अलग–अलग जातियों–जनजातियों के नाम से उल्लेखित जीवन यापन करता हुआ दिखाई देता है।

घुमन्तू के प्रकार
(1) खाद्य संग्राहक वनवासी घुमन्तू
(2) चरवाहे या पशुपालक घुमन्तू
(3) व्यापारिक घुमन्तू
(4) भिक्षुक घुमन्तू

अध्ययन क्षेत्र राजस्थान में कई प्रकार की घुमन्तू जातियाँ है, जो अग्रलिखित तालिका में है, वो भी कुछ इस प्रकार ही जीवनयापन कर रही है। यह शोध पत्र इन्हीं जातियों में से एक जाति "बंजारा" जाति पर आधारित है।

बंजारा	गाड़िया लोहार
जोगी कालबेलिया	परधिस
दोमाबरिस	इरानिस
जोगी कनफटा	खुरपलटस
सिकलीगर	धीमादिस

बंजाराः
बंजारा समाज का मूल लगभग सभी इतिहासकारों ने राजस्थान को ही माना है। बंजारा समाज यह भारत के प्रत्येक प्रान्त में अलग–अलग नामों से जाना जाता है, जैसे कर्नाटक में लामड़ी, आन्ध्रप्रदेश में लबाड़ा, पंजाब में बाजीगर इत्यादि। बंजारा कुछ खास चीजों के लिए बेहद प्रसिद्ध है, जैसे नृत्य, संगीत, रंगोली, कशीदाकारी गोदना और चित्रकारी। बंजारा समाज पशुओं में बेहद लगाव रखते है,

अधिकतर बंजारों के कारवा में बैल होते हैं, बंजारों के कारण को 'टाडा' कहते है, टाडा में 600–700 तक लोग हो सकते हैं जो अस्थायी घर बनाकर रहते है, इसमें रोजाना इस्तेमाल की जाने वाली वस्तुएँ रखते है, दिनभर चलना और सूर्यास्त पर कहीं डेरा डालकर वहीं पर यह खाना बनाते है। शहर में यह लोग आमतौर पर सड़क किनारे टेंट में या फिर खुले में अस्थायी तौर पर कुछ लोग रहते दिख जायेगें, कई बार यह लोग 2 से 3 दिन तो कई बार हफ्तों ऐसे ही समय गुजार देते है। लोक गीत व लोक नृत्य इनके जीवन का अभिन्न हिस्सा है, कई फिल्मों में भी बंजारों पर गाना फिल्माया जा चुका है, इनमें से कई गीत तो सुपरहिट हुए है जो आज भी लोगों की जुबान पर रहते है, कई पुरानी फिल्में तो बंजारों की पृष्ठभूमि पर ही बनी है।

अध्ययन क्षेत्र

देश के सबसे बड़े राज्य के रूप में राजस्थान में घुमन्तू जातियों का विश्लेषण भौगोलिक रूप से महत्वपूर्ण है। भूगोल की महत्वपूर्ण संकल्पना क्षेत्रीय भिन्नता को दृष्टिगत रखते हुए अध्ययन करने के उद्देश्य से शोधार्थी ने विविधता से भरे राजस्थान जैसे राज्य का चुनाव किया। राजस्थान राज्य में घुमन्तू जातियों का विचरण क्षेत्र लगभग सम्पूर्ण राज्य में है लेकिन पश्चिम राजस्थान में तथा द. पूर्वी राजस्थान में अधिक क्रियाशील है।

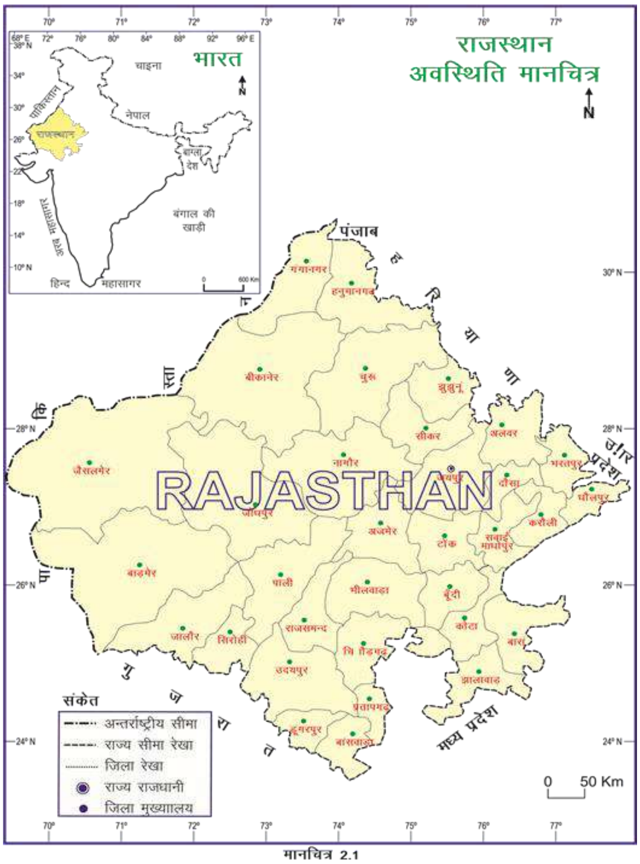

मनचित्र संख्या 1: राजस्थान मानचित्र

राजस्थान की स्थिति भारत के उत्तर–पश्चिम भाग में 23^{0}3′ उत्तरी अंक्षाश से 30^{0}12′ तथा 69^{0}30′ पूर्वी देशान्तर में 78^{0}17′ पूर्वी देशान्तर के मध्य है। 23^{0}30′ उत्तरी अंक्षाश रेखा (कर्क रेखा) राजस्थान के दक्षिण सिरे को स्पर्श करती है। पड़ौसीय अवस्थिति की दृष्टि से इसके पूर्वोत्तर में पंजाब, हरियाणा व उत्तर प्रदेश, दक्षिण पूर्व में मध्य प्रदेश तथा दक्षिण पूर्व में गुजरात राज्य है। प्रशासनिक दृष्टि से राज्य 7 संभागों एवं 33 जिलों में विभक्त किया गया है।

शोध के उद्देश्य

- राजस्थान राज्य के बंजारा जाति के सामाजिक–आर्थिक जीवन के स्तर का विश्लेषण करना।
- घुमन्तू जाति बंजारा के व्यावसायिक संरचना के बारे में अध्ययन करना।
- राजस्थान राज्य में इस समुदाय के लिए किए गए सरकारी प्रयासों का विश्लेषण करना।

शोध परिकल्पना

बंजारा जाति के लोगों का सामाजिक–आर्थिक विकास का स्तर निम्न है।

शोध विधि

इस शोध पत्र में द्वितीयक आंकड़ों का एकत्रण विभिन्न जर्नल्स, पुस्तकें, वेबसाइट्स आदि से किया गया है तथा सांख्यिकी आंकड़ें सरकारी विभागों तथा प्रतिवेदनों से लिए गए है और प्राथमिक आंकड़े शोधार्थी द्वारा साक्षात्कार अनुसूची द्वारा लिए गए है, जिसका बाद में सांख्यिकी विश्लेषण किया गया।

निदर्शन आकार

राजस्थान के अलग–अलग जिलों से 200 बंजारे लोगों का सर्वेक्षण किया गया जिसमें अनुसूची द्वारा उनके सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक स्थिति के सारे पक्षों को शामिल करने का शोधार्थी द्वारा प्रयास किया गया है।

व्याख्या, विश्लेषण तथा सुझाव

उपर्युक्त शोध विधि के अनुसार 200 बंजारे लोगों का अनुसूची साक्षात्कार द्वारा सर्वेक्षण किया गया। जिसके अन्तर्गत 133 पुरूषों तथा 67 महिलाओं को शामिल किया गया है। जिसमें उनकी आयु वर्गवार संख्या, शिक्षा, व्यवसाय, स्वास्थ्य, आय, संस्कृति, कल्याणकारी योजनाओं के पक्षों को शामिल किया गया है।

1. उत्तरदाताओं का लिंग आधारित विवरण

तलिका 1: लिंग आधारित विवरण

उत्तरदाता	आवृति	प्रतिशत
पुरूष	133	66.5
महिला	67	33.5
कुल	200	100

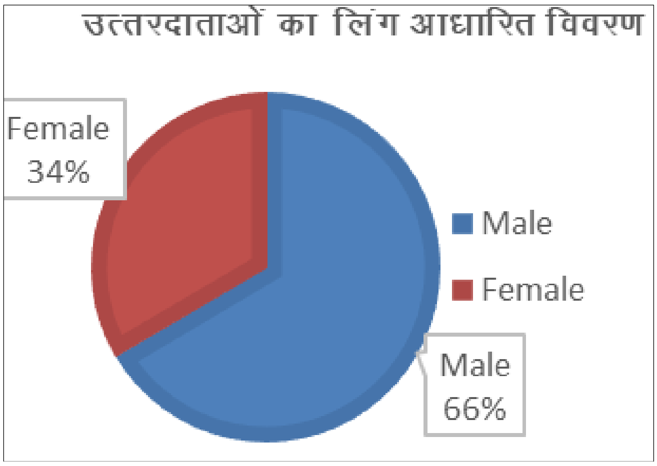

चित्र 1: उत्तरदाताओं का लिंग आधारित विवरण

उपर्युक्त तालिका के अनुसार पुरूष उत्तरदाताओं की संख्या महिला उत्तरदाताओं से कई अधिक है जिसका प्रमुख कारण इन

समाज की महिलाओं में परम्परा और रूढ़िवादी संस्कृति के कारण समाज के मुख्य धारा के साथ जुड़ने में संकोच तथा झीझक है। इसी कारण सर्वेक्षण में महिला उत्तरदाताओं की संख्या कम है।

तालिका 2: उत्तरदाताओं का आयु वर्गवार विवरण

उत्तरदाता	आवृति	प्रतिशत
18 से 25 वर्ष	33	16.5
26 से 40 वर्ष	53	26.5
41 से 50 वर्ष	67	33.5
50 वर्ष से अधिक	47	23.5
ज्वजंस	200	100

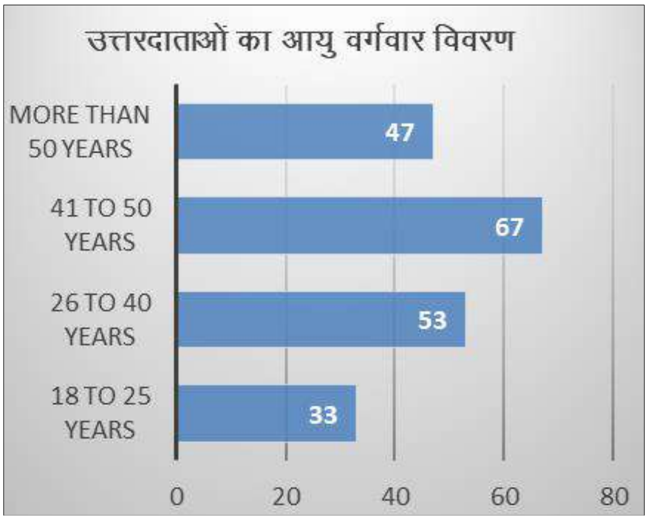

चित्र 2: उत्तरदाताओं का आयु वर्गवार विवरण

उपर्युक्त तालिका से निष्कर्ष निकलता है कि मध्यम आयु वर्ग के लोगों ने सर्वेक्षण में अधिक रूची दिखाई तथा निम्न आयु वर्ग (18 से 25 वर्ष) के लोगों ने सर्वेक्षण में कम रूची दिखाई।

3. शैक्षणिक योग्यता

तालिका 3: शैक्षणिक योग्यता

उत्तरदाता	आवृति	प्रतिशत
निरक्षर	42	21
प्राथमिक	70	35
माध्यमिक	48	24
स्नातक	30	15
स्नातकोत्तर	10	5
कुल	200	100

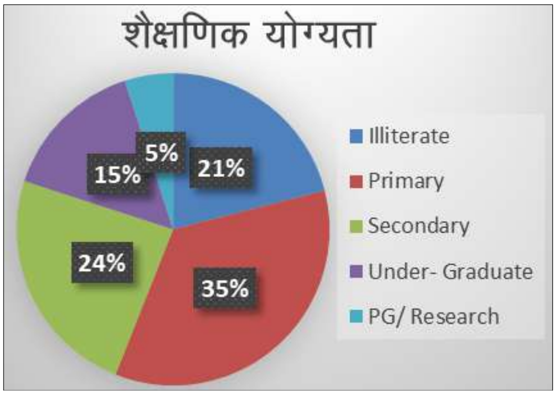

तालिका 3: शैक्षणिक योग्यता

उपर्युक्त तालिका के अनुसार इस समाज वर्ग के लोगों का शैक्षणिक स्तर बहुत निम्न है, अधिकांश लोगों ने केवल प्राथमिक स्तर तक की ही शिक्षा प्राप्त की है। सरकार द्वारा बंजारा लोगों को मुख्यधारा में लाने के लिए इनके शैक्षणिक स्तर को बढ़ाने की पहल करनी चाहिए।

4. नशे की प्रवृत्तिः–

तालिका 4: नशे की प्रवृत्ति

उत्तरदाता	आवृत्ति	प्रतिशत
शराब	106	53
जुआ	33	14.5
धुम्रपान/तम्बाकु	66	33
कुछ नहीं	70	35

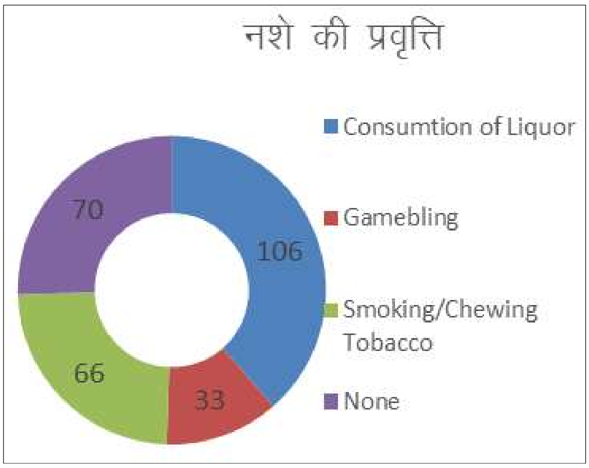

चित्र 4: नशे की प्रवृत्ति

उपर्युक्त तालिका के अनुसार नशे की प्रवृति में शराब का सेवन सबसे अधिक है तथा शराब को इन्होंने अपनी संस्कृति का हिस्सा बना लिया जिसके फलस्वरूप यह लोग इसको सामाजिक बुराई के रूप में नहीं लेते है। स्वयं सहायता समूह तथा गैर सरकारी संगठन के सहयोग से सरकार को इनसे बाहर निकालने का प्रयास किया जाना चाहिए, हालांकि सरकार द्वारा नवजीवन योजना चलाई जा रही है जिसके माध्यम से भी इनमें नशे की प्रवृत्ति को कम किए जाने का प्रयास किया जा रहा है।

5. गर्भावस्था व शिशु जन्म के समय स्वास्थ्य जागरूकता की स्थितिः–

तालिका 5: गर्भावस्था व शिशु जन्म के समय स्वास्थ्य जागरूकता की स्थितिः–

उत्तरदाता	आवृत्ति	प्रतिशत
सरकारी अस्पताल	170	85
महिला सहायता केन्द्र	14	7
निजी अस्पताल	16	8
अन्य	Nil	Nil
कुल	200	100

उपर्युक्त तालिका के अनुसार सरकारी योजनाओं जैसे मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा तथा जाँच योजना, जननी एक्सप्रेस और चिरंजीवी योजना के कारण संस्थागत प्रसव की मात्रा में बढ़ोत्तरी हुई है अर्थात् स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता इन समाज के लोगों में बढ़ी है।

तालिका 6: कल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित

उत्तरदाता	आवृत्ति	प्रतिशत
रोजगार में आरक्षण	16	8
प्रवेश प्रकिया में आरक्षण	28	14
स्कॉलरशिप	34	17
वित्तीय सहायता	24	12
अन्य	19	9.5
कुछ नहीं	133	66.5
योग	200	100

चित्र 5: कल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित

उपर्युक्त तालिका के अनुसार अधिकतर लोगों को सरकार द्वारा चलाई जा रही कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी का अभाव है। सरकार तथा स्वयं सहायता समुह द्वारा इनमें जागरूकता को बढ़ाना चाहिए, जिससे लाभान्वित होकर अपनी बुनियादी सुविधाओं तथा सामाजिक स्तर को बढ़ा सके।

7. उत्तरदाताओं के व्यवसाय

तालिका 7: उत्तरदाताओं के व्यवसाय

विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
बेरोजगार / ग्रहणी	44	22
कृषि	41	20.5
संगठित क्षेत्र में रोजगार	12	6
असंगठित क्षेत्र में रोजगार	73	36.5
सूक्ष्म उद्योग	30	15
कुल	200	100

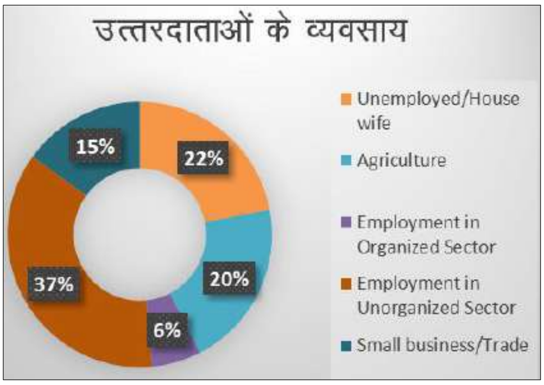

चित्र 6: उत्तरदाताओं के व्यवसाय

उपर्युक्त तालिका के अनुसार ज्यादातर बंजारे समाज के लोग असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत है तथा कुछ लोग कृषि क्षेत्र में कार्यरत है अर्थात बंजारा लोगों की पसंद और कौशल को देखते हुए इन लोगों को लघु तथा हस्तकला उद्योगों के लिए प्रेरित और सहायता करनी चाहिए। इस हेतु सरकार को लघु एवं कुटीन उद्योग तथा हस्तकला उद्योग में चलाई जाने वाली योजनाओं में इनको विशेष बढ़ावा तथा सहायता दी जानी चाहिए।

8. उत्तरदाताओं की वार्षिक आय

सारणी 8: उत्तरदाताओं की वार्षिक आय

उत्तरदाता	आवृत्ति	प्रतिशत
शून्य	33	16.5
20000 से कम	73	36.5
20001 से 45000	64	32
45001 से 1.50 लाख	17	8ण्5
1.50 लाख से अधिक	13	6ण्5
कुल	200	100

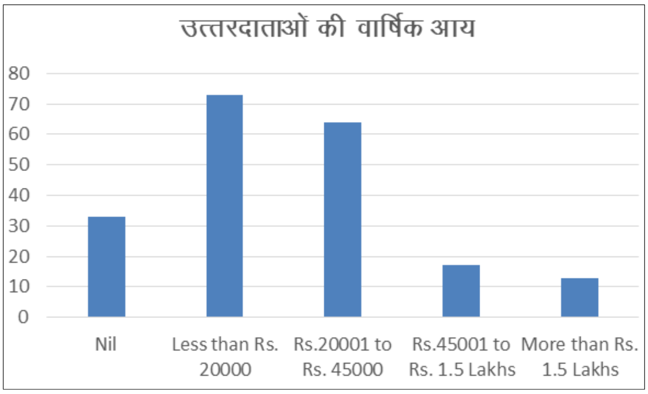

चित्र 7: उत्तरदाताओं की वार्षिक आय

उपर्युक्त तालिका के अनुसार अधिकतर लोगों की वार्षिक आय 20000 से कम है अर्थात् अधिकतर उत्तरदाताओं की वार्षिक आय निम्न है, रोजमर्रा की आवश्यकताओं को भी पूर्ण करने में भी असमर्थ है। सरकार द्वारा इन समुदाय के लोगों को मनरेगा योजना के अन्तर्गत अतिरिक्त दिनों के रोजगार का सृजन करना चाहिए।

राजस्थान सरकार द्वारा किए गए प्रयास:

घुमन्तू जातियों की अधिकांश जनसंख्या एस.सी., ओ.बी.सी. में शामिल होने के कारण राज्य सरकार द्वारा संचालित योजनाऐं छात्रवृत्ति, छात्रावास, अनुप्रति योजना, अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति ,वित्त एवं विकास निगम द्वारा स्वरोजगार हेतु रियायती दर पर अनुदान सहित ऋण योजना आदि में इन घुमन्तू जातियों को लाभांवित किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त राज्य सरकार ने घुमन्तू जातियों के कल्याण के सुझाव देने हेतु घुमन्तू कल्याण बोर्ड का गठन किया गया है। सुझाव प्राप्त होने पर राज्य सरकार द्वारा उचित कार्यवाही की जावेगी।

निष्कर्ष

यह शोध–पत्र भूगोल विषय के सभी आयामों, भौतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय पहलुओं का अध्ययन करता है, इसलिए यह शोध पत्र बंजारा जाति के संतुलित, आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगा। सरकार ने इस समुदाय के सामाजिक आर्थिक विकास के स्तर को ऊपर उठाने के लिए कई कदम उठाए। सरकार ने कई सामाजिक कल्याण की योजनाएँ भी चलाई लेकिन फिर भी आज भी यह समुदाय काफी पिछड़ा है। अभी तक इस बारे में गहन अध्ययन नहीं किया गया। यह शोध पत्र इस समुदाय के सामाजिक–आर्थिक दशाओं को उजागर करता है।

संदर्भ सूची

1. Ruhela SP. the Gaduliya Lohars of Rajasthan: A Study in the Sociology of Nomadism, impex India Publication. 1968.
2. Naik DB. The Art and Literature of Banjara. Lambanis. New Delhi, Abhinav Publication, 2000.
3. Charrde, Vandana. Sociological Study of Gosawi Nomadic. Tribes in Nagpur Division, International Journal of Multisciplinary research (IJMR). 2020, 6(1).
4. खटीक डी.के. राजस्थान में जनजाति विकास का सामाजिक–आर्थिक अध्ययन (प्रतापगढ़ जिले के विशेष संदर्भ में), Journal Innovation. The Research Concept, 2017, 2.
5. सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, प्रशासनिक प्रतिवेदन, 2022–23.
6. राजस्थान राज विमुक्त, घूमन्तू एवं अर्द्धघुमन्तू कल्याण बोर्ड